हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान
कोनिफ़र कैम्पस, पंथाघाटी
शिमला -171 013 (हिमाचल प्रदेश)

वन पौधशाला में माइकोराइजा का उपयोग और कीट एवं रोगों के प्रबंधन पर प्रशिक्षण: एक रिपोर्ट

8 मार्च, 2019

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला में संस्थान के सभागार में मार्च 8, 2019 को **"वन पौधशाला में माइकोराइजा का उपयोग और कीट एवं रोगों के प्रबंधन"** पर प्रशिक्षण कार्य-क्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया। जो कि वन प्रशिक्षण संस्थान, चायल, जिला सोलन, हिमाचल प्रदेश एवं इको टास्क फोर्स, कुफरी, जिला शिमला के सदस्य थे। प्रशिक्षण का उद्देश्य माइकोराइजा के उपयोग द्वारा शंकुधारी पेड़ों की स्वस्थ पौधशाला तैयार करना और वनों में कीट- पतंगों और बीमारी के संक्रमण के प्रबंधन पर विभिन्न हितधारकों में जागरूकता पर बल देना था। **डॉ. अश्वनी तपवाल**, वैज्ञानिक- ई और प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक ने प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत किया और उन्हें प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में अवगत कराया।

डॉ. वी.पी. तिवारी, निदेशक, हिमालय वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन संबोधन में, डॉ. तिवारी ने वन पौधशाला तैयार करते समय माइकोराइज़ल कवक के उपयोग पर जोर दिया। उनका मत था कि नर्सरी में माइकोराइजा के कृत्रिम उपयोग से शिशु पौधों की वृद्धि में मदद मिलेगी और रोपाई की अवधि में काफी कमी आएगी। उन्होंने यह भी कहा कि जंगलों में कीट और बीमारियों का सही समय पर पहचान करने से निकट भविष्य में इनके प्रकोप को रोका जा सकता है। उन्होंने हितधारकों खासकर राज्य वन विभाग के सदस्यों को कीट और रोग प्रबंधन के लिए पर्यावरण - अनुकूल साधनों का उपयोग करने की सलाह दी। डॉ. तिवारी ने प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए प्रशिक्षुओं को चर्चा में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

तकनीकी सत्र के दौरान, **डॉ. अश्वनी तपवाल** ने वन पारिस्थितिकी तंत्र में माइकोराइजा के महत्व पर प्रकाश डाला और स्वस्थ और टॉल प्लांटिंग स्टॉक का उत्पादन के लिए माइको- राइजल कवक के कृत्रिम उपयोग की तकनीक पर विस्तार से चर्चा की। **श्री. सुभाष चंदर**, वैज्ञानिक-डी ने पौधशाला और वृक्षारोपण में white grub और दीमक के प्रकोप एवं उनके प्रबंधन और वानिकी प्रजातियों के संदर्भ में कीट पतंगों के पर्यावरण के

अनुकूल प्रबंधन पर विस्तृत रूप से व्ख्यान दिया। **डॉ. संतोष वाटपडे,** वैज्ञानिक, आई.ए.आर.आइ. क्षेत्रीय संस्थान, शिमला ने वन पौधशाला की महत्वपूर्ण बीमारियों पर प्रकाश डाला और उनके प्रबंधन का सुझाव दिया।

दोपहर सत्र के दौरान, डॉ. तपवाल ने शंकुधारी वनों के महत्वपूर्ण कवक रोगों पर विस्तार से चर्चा की और उनके पर्यावरण के अनुकूल प्रबंधन पर जोर दिया। उन्होंने सुझाव दिया कि कीट व्याधियों और रोगों के प्रबंधन के लिए एकीकृत दृष्टिकोण विकसित करने के लिए विभिन्न प्रकार के नियंत्रण उपायों को एक साथ जोड़ा जाना चाहिए। **डॉ. संदीप शर्मा**, वैज्ञानिक-जी, एच. एफ. आर.आई., ने हिमाचल प्रदेश के महत्वपूर्ण शंकुधारी वृक्षों की पौध-शाला तैयार करने की तकनीकों का विस्तार से वर्णन किया। इस के अतिरिक्त, प्रशिक्षुओं को संस्थान की प्रयोगशाला में प्रमुख उपकरणों और एक्टोमाइकोराइज़ल कवक के बड़े पैमाने पर इनोकुलम के उत्पादन की तकनीकों तथा कीटों और रोग के नमूनों से परिचित कराया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के पूर्ण सत्र के दौरान प्रतिभागियों के मुद्दों और चिंताओं को संस्थान के वैज्ञानिकों ने संबोधित किया। डॉ. वी.पी. तिवारी, निदेशक, एच. एफ. आर. आई. ने प्रशिक्षुओं को भागीदारी के प्रमाण पत्र वितरित किए। उन्होंने प्रशिक्षण कार्यक्रम में गहरी रुचि दिखाने के लिए प्रतिभागियों की सराहना की और भविष्य में प्रशिक्षण कार्यक्रम की अवधि बढ़ाने के लिए उनके सुझाव पर ध्यान देने का आश्वासन दिया। डॉ. राजेश शर्मा, समूह समन्वयक (अनुसंधान) ने अपने समापन भाषण में संस्थान द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के महत्व पर प्रकाश डाला और नर्सरी में माइकोराइज़ल कवक की भूमिका पर जोर दिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम डॉ. अश्वनी तपवाल द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ संपन्न हुआ।

कार्यक्रम की झलकियां

FOREST
FOREST

Application of Mycorrhizae in Forest Nurseries
and Management of Insect-Pests and Diseases
Capacity building training for the field functionaries of
State Forest Department and Members of Eco-task Force
8th March, 2019
GBPNIHESD
Funded by:

Capacity building training for
State Forest Department and M
8th March,
Organized b
Himalayan Forest Res
Panthaghati, Shim
G.B. Pant National Institu
and Sustainable Developr

of Insect-Pests and Diseases
aining for the field functionaries of
ent and Members of Eco-task Force
8th March, 2019
Organized by:
an Forest Research I
Panthaghati, Shimla (H.P.)
onal Institute of
ble Development,
an Environment
(Uttarakhand)

MEDIA COVERAGE

शिमला भास्कर

शिमला | शनिवार 09 मार्च, 2019 रामपुर • रोहड़ू • ठियोग किन्नौर • कोटखाई • कुमारसैन

वर्कशॉप • हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान पंथाघाटी में हुई माइकोराइजा पर कार्यशाला

समय रहते हो जाए कीट-पतंगों की पहचान तो पेड़ों को बचाया जा सकता है कई तरह की बीमारियों से

सिटी रिपोर्टर | शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान पंथाघाटी, शिमला में माइकोराइजा का वानिकी मे महत्व एवं कीट पतंगों और बीमारियों का प्रबंधन विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम हुआ।

इसं प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिमाचल वन विभाग के कर्मचारी जो वर्तमान में वन प्रशिक्षण संस्थान, चायल के प्रशिक्षणार्थी हैं और इको टास्क फोर्स के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्राथमिकता माइकोराइजा के उपयोग द्वारा शंकुधारी वनों की स्वस्थ पौधशाला को तैयार करना और

हिमाचलयन वन अनुसंधान केंद्र में हुई वर्कशॉप में मौजूद प्रतिनिधि।

पश्चिम हिमालय क्षेत्रों के वनों में कीट पतंगों और बीमारियों की बढ़ती घटनाओं पर प्रकाश डालना और इनके प्रबंधन पर प्रदेश के विभिन्न हितकारको में जागरुकता पर ध्यान देना रहा।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ वीपी तिवारी ने पौधशाला में बीजाई के दौरान माइकोराइजल कवक के प्रयोग के बारे में बताया कि यह अंकुरित पौधों की अच्छी बढ़ोतरी के लिए मददगार साबित होगा। उनकी यह भी राय थी कि समय रहते वनों में कीट पतंगों एवं बीमारियों की पहचान करने से भविष्य में उनके द्वारा होने वाले प्रकोपों से बचा जा सकता है उन्होंने खास तौर पर हिमाचल वन विभाग से आए हुए प्रतिभागियों को कीट पतंगों एवं बीमारियों के पर्यावरण प्रबंधन की सलाह दी।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों ने संस्थान वन व संरक्षण की प्रयोगशाला का दौरा भी किया गया जहां पर प्रतिभागियों को आधुनिक माइकोराइजा तैयार करने की विधि एवं वनों के मुख्य कीट पंतगों एवं बीमारियों के लक्षणों पर विस्तार से जानकारी दी।

माईकोराइजा के महत्व बारे बताया

शिमला, 8 मार्च (ब्यूरो): हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान पंथाघाटी के सभागार में माईकोराइजा का वानिकी में महत्व एवं कीट पतंगों और बीमारियों का प्रबंधन विषय पर एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें हिमाचल वन विभाग के चायल में कार्यरत कर्मचारी एवं ईको टास्क फोर्स के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

पंजाब केसरी ई-पेपर Sat, 09 M https://e

वन कर्मियों ने जानी पौधों के इलाज की बारीकियां

दिव्य हिमाचल ब्यूरो - शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, पंथाघाटी, शिमला के सभागार में माइक्रोराइजा का वानिकी में महत्त्व एवं कीट पतंगों और बीमारियों का प्रबंधन विषय पर एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुक्रवार को आयोजित हुआ। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिमाचल वन विभाग के कर्मचारी, जो वर्तमान में वन प्रशिक्षण संस्थान, चायल के प्रशिक्षणार्थी हैं एवं इको टास्क फोर्स के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्राथमिकता माइक्रोराइजा के उपयोग द्वारा शंकुधारी वनों की स्वस्थ पौधशाला को तैयार करना और उत्तर-पश्चिम हिमालय क्षेत्रों के वनों में कीट पतंगों और बीमारियों की बढ़ती घटनाओं पर प्रकाश डालना और इनके प्रबंधन पर प्रदेश के विभिन्न हितकारकों में जागरूकता पर बल देना है। इस कार्यक्रम के आरम्भ में प्रशिक्षण के समन्वयक डा. अश्वनी तपवाल, वैज्ञानिक एवं प्रभागाध्यक्ष, वन बचाव प्रभाग ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया और संक्षिप्त रूप से प्रशिक्षण कार्यक्रम का विवरण दिया। डा. वीपी तिवारी, निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने अपने उदघाटन अभिभाषण में पौधशाला में बीजाई के दौरान कृत्रिम माईक्रोराइजल कवक के प्रयोग पर प्रकाश डाला।

दिव्य हिमाचल Sat, 09 March 2019 https://epaper.divyahimac

शिमला, शनिवार 9 मार्च, 2019

हिमाचल दस्तक

प्रशिक्षुओं को किया जागरूक

शिमला। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, पंथाघाटी, शिमला के सभागार में माईकोराइजा का वानिकी मे महत्व एवं कीट पंतगों और बीमारियों का प्रबन्धन विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिमाचल वन विभाग के कर्मचारी जो वर्तमान में वन प्रशिक्षण संस्थान, चायल के प्रशिक्षणार्थी हैं एवं इको टास्क फोर्स के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्राथमिकता माईकोराइजा के उपयोग द्वारा शंकुधारी वनों की स्वस्थ पौधशाला को तैयार करना और उ.पश्चिम हिमालय क्षेत्रों के वनों में कीट पंतगों और बिमारियों की बढ़ती घटनाओं पर प्रकाश डालना और इनके प्रबंधन पर प्रदेश के विभिन्न हितकारको में जागरुकता पर बल दिया गया।